केले को बचायें रोग-कीट से

रोग -

पनामा बिल्ट या उकठा - यह बीमारी फ्यूजेरियम ऑक्सीस्पोरम नामक फफूंद के द्वारा फैलती है पौधे की पत्तियां मुरझाकर सूखने लगती हैं केले का पूरा तना फट जाता है प्रारंभ में पत्तियां किनारों से पीली पड़ती हैं प्रभावित पत्तियां डण्ठल से मुड़ जाती हैं प्रभावित पीली पत्तियां तने के चारों ओर स्कर्ट की तरह लटकती रहती हैं। आधार पर (निचले भाग) तने का फटना बीमारी का प्रमुख लक्षण है। बैस्कूलर टिश्यू जड़ों और प्रकंद में पीले, लाल एवं भूरे रंग में परिवर्तित हो जाते हैं पौधा कमजोर हो जाता है। जिसके कारण पुष्पन फलन नहीं होता है। इस बीमारी की फफूंद जमीन में अनुकूल तापक्रम, नमी एवं पी.एच. की स्थिति में लम्बी अवधि तक रहता है।

नियंत्रण

- गन्ना एवं सूरजमुखी के फसल चक्र को अपनाने से बीमारी का प्रकोप कम हो जाता है।
- सकर्स को लगाने के पूर्व 0.2 प्रतिशत बाविस्टीन के घोल में डुबोकर लगाना चाहिए।
- ट्राइकोडर्मा बिरिडी जैविक फफूंदनाशक का उपयोग करना चाहिए।
- जिलेटिन केप्सूल में 50 ग्राम बाविस्टीन भरके कैप्सूल अप्लीकेटर के सहारे कंद में 45 डिग्री कोण पर रखने से बीमारी पर अच्छा नियंत्रण देखा गया है।

लीफ स्पाट (सिंगाटोका)

यह बीमारी स्यूडोसर्कोस्पोरा म्यूसी फफूंद के कारण होती है। इस बीमारी के प्रकोप से पत्तियों में क्लोरोफिल की कमी हो जाती है। क्योंकि टिशू हरे से भूरे रंग के हो जाते हैं। धीरे-धीरे पौधे सूखने लगते है। प्रारंभ में पत्तियों पर छोटे धब्बे दिखाई देते हैं। फिर यह पीले या हरी पीली धारियों में बदल जाते हैं। जो पत्तियों को दोनों सतहों पर दिखाई देते हैं अंत में यह धारियां भूरी एवं काली हो जाती हैं। धब्बों के बीच का भाग सूख जाता है।

नियंत्रण -

प्रभावित सूखी पित्तियों को काटकर जला देना चाहिए। फफूंद नाशक दवाएं जैसे डाइथेन एम-45, 1250 ग्राम/हेक्टेयर या बाविस्टीन 500 ग्राम/हेक्टेयर या प्रोपीकोनाजोल 0.1 प्रतिशत का छिड़काव टिपॉल के साथ अक्टूबर माह से 3-4 छिड़काव 2-3 सप्ताह के अंतराल से करने से बीमारी पर नियंत्रण रखा जा सकता है।

एन्थ्रेक्नोज

यह बीमारी कोलेट्रोट्राईकम मुसे नामक फफूंद के कारण फैलती है। यह बीमारी केले के पौधे में बढ़वार के समय लगती है। इस बीमारी के लक्षण पौधों की पत्तियों, एवं फल के छिलके पर छोटे काले गोल धब्बों के रूप में दिखाई देते है। इस बीमारी का प्रकोप जून से सितम्बर तक अधिक होता है क्योंकि इस समय तापक्रम ज्यादा रहता है।

नियंत्रण

- प्रोक्लोराक्स 0.15 प्रतिशत या कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव करें।
- केले को 3/4 परिपक्वता पर काटना चाहिये।

शीर्ष गुच्छ

(बंचीटाप) पत्तियों की भीतरी मिडरिब की द्वितीयक नसों के साथ अनियमित गहरी (मोर्सकोड) धारियां शुरू के लक्षण के रूप में दिखाई देती है ये असामान्य लक्षण गहरे रंग की रेखाओं में एक इंच या ज्यादा लम्बी अनियमित किनारों के साथ होते हैं। पौधों का ऊपरी सिरा एक गुच्छे का रूप ले लेता है। पत्तियां छोटी व संकरी हो जाती है। किनारे ऊपर की ओर मुड़ जाते हैं डण्ठल छोटा व पौधे बौने रह जाते हैं और फल नहीं लगते हैं। इस

बीमारी के विषाणु का वाहक पेन्टोलेनिया नाइग्रोनरवोसा नामक माहू है।

नियंत्रण

- रोगग्रसित पौधों की निकालकर नष्ट कर देना चाहिये।
- रोग वाहक कीट नियंत्रणके लिये मेटासिस्टॉक्स 1.25 मि.ली. या डेमेक्रान 0.5 मि.ली. दवा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।
- रोग रहित सकर्स का चुनाव करें।

कीट

तना भेदक

तना भेदक कीट का मादा वयस्क पत्तियों के डंठलों में अंडे देती है। जिससे इल्ली निकलकर पत्तियों एवं तने को खाती है। प्रारंभ में पौधे के तने से रस निकलता हुआ दिखायी देता है। फिर कीट की लार्वी द्वारा किये गये छिद्र से गंदा पदार्थ पत्तियों के डंठल पर बूंद-बूंद टपकता है। जिससे तने के अंदर निकल रहे पुष्प प्रोमोडिया शुष्क हो जाता हैं। इसका प्रकोप वर्ष भर होता है।

नियंत्रण

घेरे को काटने के बाद पौधों को जमीन से काटकर कीटनाशक दवा कार्बोरिल 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव करने से अंडे व कीट नष्ट हो जाते है।

माहू

यह कीट केले की पत्तियों का रस चूसकर हानि पहुंचाता है। तथा बंची टाप वाइरस को फैलाने का प्रमुख वाहक है। इस माहू का रंग भूरा होता है। जो पत्तियों के निचले भाग या पौधे के शीर्ष भाग से रस चूसती है।

नियंत्रण

फास्फोमिडान 0.03 प्रतिशत के घोल का छिड़काव करें.

थ्रिप्स

तीन प्रकार की थ्रिप्स केला फल (फिंगर) को नुकसान पहुंचाती है। थ्रिप्स प्रभावित फल भूरा बदरंग, काला तथा छोटे-छोटे क्रेक आ जाते है। यद्यपि फल के गूदे पर प्रभाव नहीं पड़ता परंतु बाजार भाव ठीक नहीं मिलता।

नियंत्रण

डायमिनॉन 20 ई.सी. की 1625 से 2500 मि.ली. मात्रा प्रति हेक्टर का छिड़काव करें.

लेस विंगस बग

यह कीट सभी केला उत्पादक क्षेत्रों में पाया जाता है। इस कीट से प्रभावित पत्तियां पीली पड़ जाती हैं। पत्तियों के निचले भाग में रहकर रस चूसती है।

नियंत्रण

मैलाथियान की 1.5 मि.ली. दवा प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव करें.

पत्ती खाने वाली इल्ली

इस कीट की इल्ली नये छोटे पौधों की बिना खुली पत्तियों को खाती है। पत्तियों में नये छेद बना देती है।

नियंत्रण

थायोडान 35 ई.सी. का छिड़काव (1.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी) पत्तियों पर करने से प्रभावी नियंत्रण देखा गया है।

केले का धारी विषाणु

इस बीमारी के कारण प्रारंभ में पौधों की पत्तियों पर छोटे पीले धब्बे जो बाद में सुनहरी पीली धारियों में बदल जाते हैं। क्लोरोटिक धारियां पत्तियों के लेमिना पर काला रूप लिये नेक्रोटिक हो जाती है। घेर का बाहर न निकलना बहुत छोटी घेर निकलना एवं फलों में बीज का विकास प्रभावित पौधों के प्रमुख लक्षण है। इस रोग का विषाणु मिलीबग एवं प्लेनोकोकस सिट्री के द्वारा फैलाया जाता हैं।

नियंत्रण

प्रभावित पौधों को निकालकर नष्ट कर देना चाहिए तथा मिली बग के नियंत्रण के लिये कार्बोफ्यूरान की डेढ़ किलो ग्राम मात्रा प्रति एकड़ के हिसाब से जमीन में डालें।